जनता को मुख्यमंत्री से भी ऊपर माननेवाले

ओडिशा के लौहपुरुष स्वर्गीय बीजू पटनायक

एक सच्चे समाजसेवी,राजनेता,ओडिशा के भूतपूर्व मुख्यमंत्री तथा ओडिशा के लौहपुरुष स्वर्गीय बीजू पटनायक का जन्म 05मार्च,1916 को ओडिशा की सांस्कृतिक नगरी कटक में हुआ था। उनके बचपन का नाम बिजयानन्द पटनायक था। नेपोलियन उनके प्रेरणास्त्रोत थे। वे लोगों को समाजसेवा के लिए प्रोत्साहित करने,एक–दूसरे को सहयोग करने और आत्मविश्वास जीतानेवाले महापुरुष के रुप में अमर हैं। वे आजीवन लोगों के साथ प्रभावशाली ढंग से बात करते थे जो उनकी एक पारदर्शी राजनेता की सबसे बड़ी पहचान थी। वे एक एअरनोटिकल इंजीनियर,नेवीगेटर,पाइलट,स्वतंत्रता सेनानी तथा उद्योगपति थे। वे एक दृढ़ इच्छाशक्ति संपन्न राजनेता थे। वे आज भी ओडिशा प्रदेश ही नहीं अपितु पूरे भारत के राजनेताओं के आदर्श हैं। वे आज भी ओडिशा की जनता के दिलों में बसे हुए अमर राजनेता हैं। उन्होंने कहा था–''21वीं सदी के ओडिशा राज्य का मेरा सपना था कि ओडिशा में मेरे पास ऐसे पुरुष और महिलाएं हों जिनके दिल में व्यक्तिगत हित से ऊपर ओडिशा राज्य के हित का खयाल हो। अपने कालेज के दिनों में वे फुटबॉल,हॉकी तथा एथलेटिक्स के खिलाड़ी थे जिसके बदौलत तीन साल तक लगातार वे स्पोर्टस चैंपियन रहे। बचपन से ही उनके मन में हवाईजहाज उड़ाने की लालसा थी। उनके पिता का नाम स्वर्गीय लक्ष्मीनारायण पटनायक तथा माता का नाम स्वर्गीया आशालता देवी था। उनके पिताजी ओडिया आन्दोलन के प्रणेता थे। उन्होंने स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान एयर ट्रांसपोर्ट कमाण्ड के प्रमुख थे। वे जेल की सजा भी काटे। उन पर स्वतंत्रता सेनानियों को अपने प्लेन में गुप्त स्थान तक पहुंचाने का आरोप था। द्वितीय विश्वमहायुद्ध में रॉयल इण्डिया एअरफोर्स में वे शामिल हो गये। उन्होंने इण्डोनेशिया के स्वतंत्रता आंदोलन में भी अहम् भूमिका निभाई। उन्होंने डच शासकों के चंगुल से इण्डोनेशिया की आम जनता को आजाद कराने में मदद की थी। 23मार्च,1947 को 22 एशियाई देशों

की पहली इण्टर एशिया कांफ्रेस में उन्होंने भी हिस्सा लिया। उस सम्मेलन में इण्डोनेशिया के तात्कालीन प्रधानमंत्री सुल्तान सजाहिर्र के आगमन को सुरक्षित तथा सुनिश्चित करने की जिम्मेदारी भी उन्होंने सफल तरीके से निभाई। वे भारत के साथ–साथ इण्डोनेशिया के भी जन नायक बन गये। ओडिशा की राजनीति में उनका प्रादुर्भाव 1946 में हुआ। वे कटक उत्तर विधानसभा क्षेत्र से निर्वाचित हुए। 1961 से लेकर 1963 तक वे ओडिशा के मुख्यमंत्री रहे। वे राज्यसभा तथा लोकसभा के सांसद भी रहे। 1975में जब भारत में आपातकाल लागू हुआ था उस वक्त विपक्षी नेताओं के साथ गिरफ्तार होनेवाले पहले राजनेता थे। 1977 में वे जब जेल से छूटे तो केन्द्रापाड़ा लोकसभा संसदीय क्षेत्र से निर्वाचित हुए तथा 1979 तक मोरारजी देसाई तथा चौधरी चरणसिंह की सरकार में केन्द्रीय इस्पात तथा खनन मंत्री थे। 1980 में वे पुनः लोकसभा के लिए निर्वाचित हुए। 1986 में वे पुनः लोकसभा का चुनाव जीते। 1990 के ओडिशा विधानसभा चुनाव में जनता दल की जीत हुई और बीजू बाबू पुनः ओडिशा के मुख्यमंत्री बने। वे 1995 तक ओडिशा के मुख्यमंत्री के रुप में ओडिशा की जनता की सेवा की और अपने कार्यकाल के दौरान यह सिद्ध कर दिया कि वे ओडिशा की जनता को मुख्यमंत्री से भी ऊपर मानते थे। इण्डोनेशिया सरकार से उनको सर्वोच्च नागरिक सम्मान ''भूमिपुत्र'' से सम्मानित किया गया। 1996 में पुनः उन्हें इण्डोनेशिया की स्वतंत्रता की 50वीं वर्षगांठ पर सर्वोच्च राष्ट्रीय पुरस्कार ''बिनतांग जासू उतमा'' से नवाजा गया। पूरे विश्व में वैज्ञानिकों को प्रोत्साहित करने के लिए उन्होंने 1952 में कलिंग फाउण्डेशन ट्रस्ट की स्थापना की और कलिंग पुरस्कार की ऐतिहासिक पहल की जिसे यूनिस्को द्वारा विज्ञान के क्षेत्र उत्कृष्ट कार्यों के लिए प्रदान किया जाता है। पारादीप बन्दरगाह के निर्माण में उनका योगदान अभूतपूर्व था। उनका निधन 17अप्रैल,1997 को हृदय तथा सांस की बीमारी के चलते हो गया। आज स्वर्गीय बीजू बाबू के जन्मदिन को ओडिशा में पंचायतीराज दिवस के रुप में मनाया जा रहा है। आज भी उनके नाम पर बीजू पटनायक अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा भुवनेश्वर समेत अनेकानेक

संस्थान उनकी सच्ची देशभक्ति तथा जननायक की सच्ची गाथा की कहानी स्पष्ट करते हैं। प्रस्तुति : अशोक पाण्डेय